प्रश्न : प्रशासन और कला के क्षेत्र में पल्लवों की उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर : सुदूर दक्षिण भारत के प्राचीन इतिहास में पल्लव वंश के शासनकाल का विशेष महत्त्व है। पल्लवों ने 325 वर्षों के लम्बे शासनकाल के दौरान सुदूर दक्षिण भारत में न केवल एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया, बल्कि एक कुशल प्रशासनिक तंत्र का संगठन भी किया, वहां उत्तर भारत के केन्द्रीयकृत शासन प्रणाली व दक्षिण भारत के स्थानीय स्वशासन प्रणाली का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। साथ ही, उन्होंने वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली (द्रविड़ शैली) के विकास में भी योगदान दिया।

पल्लव शासन का स्वरूप वंशानुगत राजतंत्र था। राजत्व को ईश्वरीय और वंशानुगत माना जाता था और वे अपनी उत्पत्ति ब्रह्मा से मानते थे। इस सिद्धांत के अनुरूप पल्लव सम्राट सर्वशक्तिमान होते थे। प्रशासन, वित्त, न्याय व सेना के क्षेत्र में अंतिम अधिकार उन्हीं के पास था। राजा का उत्तराधिकारी (युवामहराज) भी शासन में महत्वपूर्ण स्थान रखता था।

राजा को शासन कार्य में सहायता प्रदान करने के लिए एक मंत्रिपरिषद (रहस्यादिक दास) होता था। मंत्रिपरिषद के सदस्यों यथा– युवामहराज, आमात्य, महासेनापति, महादण्डनायक, विनयस्थितिस्थापक, गौल्मिक, जिलाधिकारी (रत्तिक), चंकी वसूलने वाले अधिकारी (मण्डम्बस), ग्राम प्रधान (ग्राम भोजक) इत्यादि की सहायता से राजा शासन करता था। प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से पल्लव राज्य मंडल, कोट्टम, नाडु व ग्रामों में विभक्त था। मंडल में मांडलिक या **राष्ट्रिक** तथा कोट्टम में **देशांतिक** शासन का भार संभालते थे। स्थानीय स्तर पर शासन की इकाइयों को व्यापक स्वायत्तता प्राप्त थी। स्थानीय इकाइयों के रूप में नगर (नगरम) व ग्राम (उर) सभा का उल्लेख मिलता है। इनमें शासन जनप्रतिनिधियों के माध्यम से चलाया जाता था।

Scanned with CamScanner

पल्लवों ने एक विशाल सेना का संगठन किया, जिसका मुख्य अधिकारी **सेनापति** होता था। शक्तिशाली नौसेना का गठन पल्लव शासकों की एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक उपलब्धि थी। राज्य की आय का मुख्य स्रोत भू-राजस्व था, जो उपज का छठा अंश होता था। चुंगी एवं व्यापारियों पर लगाये गये कर से राज्य को आमदनी होती थी। पल्लवों की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि मंदिर स्थापत्यकला के विकास में देखी जा सकती है। उन्होंने वास्तुकला को काष्ठकला और कंदरा-कला के प्रभाव से मुक्त कर एक विशिष्ट शैली के रूप में **द्रविड़ शैली** को विकसित किया। इस शैली के पल्लवकालीन अवशेष कांचीपुरम, महाबलिपुरम, तंजौर, पुड्डुकोटाई आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। पल्लवकालीन मंदिर वास्तुकला को प्रमुख पल्लव शासकों के नाम पर चार शैलियों महेन्द्रवर्मन शैली, मामल्ल शैली, राजसिंह शैली और नंदिवर्मन शैली में विभक्त किया गया है, जिनकी विशेषताओं का विवरण निम्नवत है :

प्रथम शैली में जो मंदिर बनवाये गये, वे सभी **शैली** (Rock Temples) मंदिर हैं, जिन्हें **मंडप** भी कहा गया है। इन्हें चट्टानों को काट कर बनाया गया है। इसमें स्तंभयुक्त बरामदे व अंदर की ओर एक-दो कमरे होते थे। इस शैली के मंदिर दालवनुर, त्रिचनापल्ली, पल्लवरम् महेन्द्रावाडी, भोगलराजपुरम एवं भैरवकोंडा इत्यादि स्थानों से मिले हैं।

द्वितीय अर्थात् मामल्ल शैली को ही **नरसिंहवर्मन शैली** भी कहते हैं। मंडप व रथ इस शैली के मंदिरों की विशिष्टताएं हैं। इसके प्रमुख

Scanned with CamScanner

केन्द्र **महाबलिपुरम** में इस शैली के मंदिरों में दस मंडप मिले हैं। ये हैं– धर्मराज मंडप, कोरिकल मंडप, महिषासुर मंडप, कृष्ण मंडप, पंचपांडव मंडप, वाराह मंडप, रामानुज मंडप; पंचायत शिव मंडप तथा दो अर्ध निर्मित मंडप। रथ शैली के मंदिर **एकाश्म मंदिर** हैं, जो रथ के आकार में चट्टानों को काट कर बनाये गये हैं। रथ शैली के आठ मंदिर मिले हैं। रथों का निर्माण बौद्ध विहारों एवं चैत्यों से प्रभावित हैं। मंडप एवं रथ दोनों को अलंकृत मूर्तियों से सजाया गया है।

तीसरे अर्थात् राजसिंह शैली के प्रमुख मंदिरों में महाबलिपुरम के समुद्र तट पर स्थित मंदिर तथा कांची के **कैलाशनाथ** और **बैकुण्ड पेरुमल** के मंदिरों का उल्लेख किया जा सकता है। इस शैली के मंदिरों का निर्माण प्रस्तर खण्डों को जोड़ कर किया गया है। मंदिरों का निर्माण चहारदीवारी के अंदर हुआ है। शिखर एवं गोपुरम (प्रवेश द्वार) के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

नन्दिवर्मन शैली में बने मंदिर आकार में छोटे हैं। ये मंदिर पूर्ववर्ती मंदिरों की प्रतिकृति मात्र हैं। शैली में कोई नवीनता नहीं है। केवल स्तंभशीर्षों का अधिक विकास हुआ है। इस शैली के मंदिरों में कांचीपुर के **मुक्तेश्वर** और **मंतगेश्वर** तथा गुडीमल्लम का परशुरामेश्वर मंदिर प्रमुख हैं। नन्दिवर्मन शैली के मंदिरों को देखकर पल्लवों के पतन का आभास स्पष्ट हो जाता है।

Scanned with CamScanner

दसवीं शताब्दी के अंत तक इन मंदिरों का निर्माण बन्द हो गया परन्तु, पल्लवों ने बौद्ध चैत्य विहारों से विरासत में मिली हुई कला का विकास किया और एक नवीन शैली को जन्म दिया, जो चोल और पाण्ड्य कला के रूप में पूर्णरूप से विकसित हुई।

पल्लव काल में **मूर्तिकला** का भी विकास हुआ, जो वास्तुकला का स्वभाविक परिणाम थी। पल्लव शैली की मूर्तिकला कहीं-कहीं गुप्त कला से साम्यता दर्शाती है, तो कहीं-कहीं विभिन्नताएं भी प्रदर्शित करती हैं। यह बौद्ध परम्परा की भी ऋणी थी। पल्लव मूर्तिकला में देवताओं और मनुष्यों के काया का अंकन अधिक गरिमामय है तथा पशुओं के अंकन करने में अन्य सभी शैलियों से श्रेष्ठ है। इस फलक में मूर्तिकार ने अपनी कल्पना को मौलिक उड़ान तथा सशक्त अभिव्यक्ति का परिचय दिया है। इस फलक में जीवधारियों का अंकन स्वाभाविक, यथार्थवादी तथा पारम्परिक तीनों ही प्रकार से हुआ है।

Scanned with CamScanner